

## पद ३१

(रागः पिलु जिल्हा - तालः दीपचंदी)

धन्यहि धन्य झालों घेतां माणिक नामा। कैवल्यसुख ते थोडें  
कवण पुण्याचा महिमा ॥ध्रु.॥ सकलजडां भेदू नाहीं कैची देहीं

अहंता। एक तो अंतरात्मा भोग्य विश्वां भोगिता। स्वरूप कल्पूं  
जातां तेथे नाहीं कल्पिता ॥१॥ अस्ति भाति प्रिय आत्मा हा  
अनुभव जगासी। जागृति स्वप्न सुषुप्ति दृश्य साक्षी देहासी। नेति  
नेति या वचनें साक्षिपणहि नाशी ॥२॥ एक सच्चिदानंदीं कवण  
भोक्ता तो पाही। निर्विकार नित्य असतां वृत्ति स्फुरेल कां ही।  
ज्ञानरूपमार्तांडा तमवार्ताहि नाहीं ॥३॥